



दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत में आर्थिक असमानता में
चिंताजनक दृष्टिकोण

भारत में आर्थिक असमानता में चिंताजनक दृष्टिकोण

संदर्भ

- आर्थिक असमानता विश्वभर में तीव्र रूप से बढ़ गई है, देशों के बीच और देशों के अंदर दोनों स्तरों पर।
- ग्लोबल साउथ में, जैसे ग्लोबल नॉर्थ में, विकास और असमानता अब साथ-साथ बढ़ते दिखाई देते हैं, क्योंकि आर्थिक विस्तार प्रायः उच्च-आय समूहों को अधिक लाभ पहुँचाता है।

आर्थिक असमानता के बारे में

- यह आय, संपत्ति और अवसरों के असमान वितरण को संदर्भित करता है, जो व्यक्तियों या समूहों के बीच एवं समाजों के बीच होता है।
 - यह मजदूरी, संसाधनों तक पहुँच, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और जीवन स्तर में अंतर के रूप में प्रकट होती है।
- किसी भी अर्थव्यवस्था में कुछ सीमा तक असमानता अपरिहार्य है, लेकिन अत्यधिक असमानता सामाजिक एकता, राजनीतिक स्थिरता और सतत विकास को खतरे में डाल सकती है।

आर्थिक असमानता के प्रकार

- आय असमानता:** यह तब होती है जब मजदूरी, निवेश और हस्तांतरण से होने वाली कमाई व्यक्तियों या परिवारों के बीच असमान रूप से वितरित होती है।
 - जिनी गुणांक** सबसे व्यापक रूप से प्रयुक्त माप है, जहाँ 0 पूर्ण समानता और 1 (या 100%) चरम असमानता को दर्शाता है।
 - उदाहरण: डेनमार्क (जिनी ≈ 0.25) में असमानता कम है, जबकि दक्षिण अफ्रीका (जिनी ≈ 0.63) गंभीर असमानता का सामना करता है।
- संपत्ति असमानता:** यह भूमि, संपत्ति, शेयर और बचत जैसी परिसंपत्तियों के स्वामित्व में असमानताओं से संबंधित है।
 - यह आय असमानता से अधिक चरम है क्योंकि संपत्ति पीड़ियों में संचित होती है।
 - विश्व असमानता रिपोर्ट (2026)** के अनुसार, शीर्ष 10% वैश्विक स्तर पर कुल संपत्ति का तीन-चौथाई हिस्सा रखते हैं, जबकि निम्न 50% के पास केवल 2% है; और शीर्ष 1% वैश्विक संपत्ति का 37% नियंत्रित करते हैं, जो विश्व के निचले आधे हिस्से से 18 गुना अधिक है।
- अवसर असमानता:** यह शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, रोजगार और सामाजिक गतिशीलता तक असमान पहुँच को दर्शाती है, तथा पीड़ियों में असमानता को पुनः उत्पन्न कर सकती है, भले ही आय समानता अस्थायी रूप से प्राप्त हो जाए।

आय असमानता का मापन

- असमानता का आकलन करने का एक सामान्य तरीका शीर्ष 10% और निम्न 50% के बीच आय अनुपात है।
 - भारत में आय अनुपात 3.87 है, जिसका अर्थ है कि शीर्ष दशांश निचले आधे हिस्से की तुलना में लगभग चार गुना कमाता है।
 - भारत में शीर्ष 10% कमाने वालों के पास आय और संपत्ति दोनों का असमान रूप से बड़ा हिस्सा है, जबकि निम्न 50% के पास कुल संपत्ति का केवल लगभग 6% है।
 - यह चीन या रूस से अधिक है, लेकिन ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका से कम है, जहाँ असमानता चरम पर है।

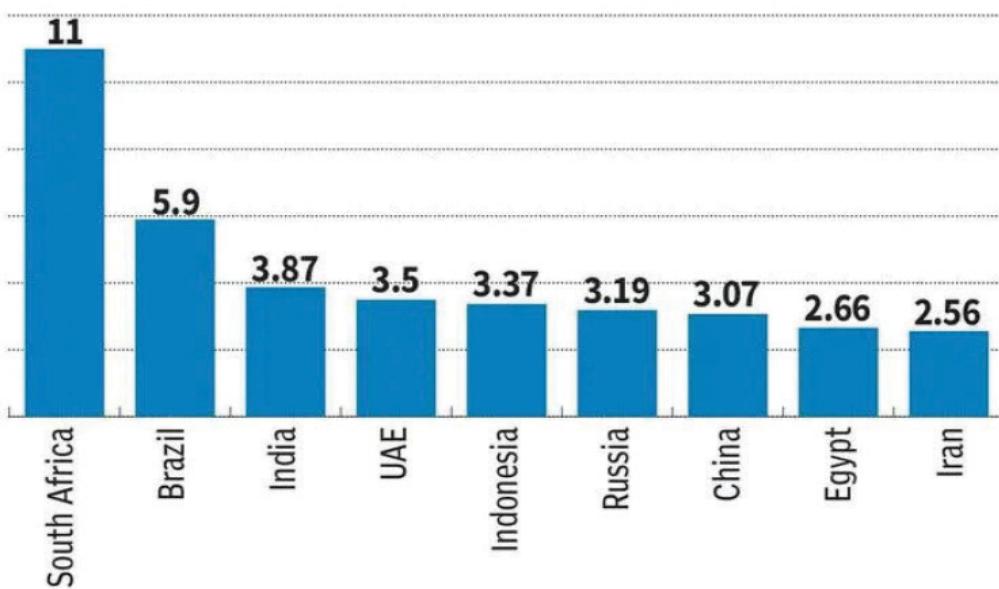
Share of income and wealth

	Top 10% income	Bottom 50% income	Top 10% wealth	Bottom 50% wealth
South Africa	66%	6%	—	—
Brazil	59%	20%	—	—
India	58%	15%	65%	6.40%
Russia	51%	16%	75%	—
Egypt	47.90%	18%	61.60%	4.20%
Indonesia	46.20%	13.70%	59.40%	2.50%
Iran	45.90%	17.90%	63.10%	3.90%
China	43%	14%	68%	—

Source: WIR 2026

Income inequality ratio in BRICS+ Nations (WIR-based)

Ratio ($\text{Top 10\% income} \div \text{Bottom 50\% income}$)



जिनी गुणांक: अलग-अलग प्रवृत्तियाँ

- आय बनाम उपभोग जिनी: भारत का उपभोग जिनी गुणांक (जो घरेलू व्यय पर आधारित असमानता का माप है) 2022–23 में घटकर 0.255 हो गया, जो अपेक्षाकृत समान उपभोग पैटर्न का सुझाव देता है।
 - हालाँकि, यह वास्तविक असमानता को कम करके दिखाता है, क्योंकि इसमें बचत या निवेश की गई आय शामिल नहीं होती और बहुत अमीरों की संपत्ति को नज़रअंदाज़ करता है।
- आय और संपत्ति जिनी: विश्व असमानता डेटाबेस के अनुसार, भारत का आय जिनी 2000 में 0.47 से बढ़कर 2023 में 0.61 हो गया, जो गहरी होती असमानता का संकेत है।
 - शीर्ष 1% कमाने वाले अब राष्ट्रीय आय का बहुत बड़ा हिस्सा प्राप्त करते हैं और देश की कुल संपत्ति का लगभग 40% रखते हैं।

असमानता के कारण

- सामाजिक व्यय में गिरावट: बढ़ती असमानता के स्पष्ट प्रमाणों के बावजूद सामाजिक क्षेत्रों पर सार्वजनिक खर्च की गति नहीं बनी।
 - सामाजिक क्षेत्र का व्यय स्थिर या घट गया है, जो 2024–25 में 17% तक गिर गया और 2025–26 में केवल 19% तक पहुँचने की संभावना है।
 - सामाजिक क्षेत्र व्यय में स्वास्थ्य और शिक्षा आवंटन, सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय एवं शिक्षा व्यय शामिल हैं।
- उच्च-कौशल और शहरी क्षेत्रों को प्राथमिकता देने वाला असमान विकास।
- रोजगारविहीन विकास और गिर अर्थव्यवस्था का उदय, जिससे अस्थिर रोजगार बढ़ा।
- शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और क्रृषि तक पहुँच में लगातार असमानता।
- संपत्ति-आय प्रतिक्रिया, जहाँ उच्च-आय वाले परिवार अधिक परिसंपत्तियाँ जमा करते हैं, जिससे असमानता में वृद्धि होती है।

हालिया नीतिगत कमी

- विकसित भारत – रोजगार और आजीविका मिशन (VB-GRAM) (ग्रामीण): यह MGNREGS का स्थान लेता है, जो एक मांग-आधारित कार्यक्रम था और गारंटीकृत ग्रामीण रोजगार प्रदान करता था।
 - VB-GRAM आपूर्ति-आधारित है और राज्य सरकार के वित्त पर अत्यधिक निर्भर है, जबकि उनकी सीमित वित्तीय क्षमता है, MGNREGS के विपरीत।
 - MGNREGS से VB-GRAM में बदलाव ग्रामीण गरीबों के लिए आय सुरक्षा को कम करके असमानता को और खराब करने का जोखिम उत्पन्न करता है।
- मांग-आधारित रोजगार गारंटी को पुनर्स्थापित करना आर्थिक संतुलन पुनर्स्थापित करने की एक आवश्यक प्रथम कदम होगा।

नीतिगत प्रतिक्रियाएँ और राजकोषीय प्राथमिकताएँ

- आर्थिक सर्वेक्षण (2024-25): यह दिखाता है कि भारत की राजकोषीय और संरचनात्मक नीतियों ने ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में जिनी गुणांक को घटाने में सहायता की है, जो हाल के वर्षों में असमानता में कमी का संकेत देता है।
- सामाजिक क्षेत्र खर्च: सरकारी बजट ने सामाजिक क्षेत्र व्यय को क्रमिक रूप से बढ़ाया है।
 - स्वास्थ्य: सरकारी स्वास्थ्य व्यय कुल स्वास्थ्य व्यय का 29% से बढ़कर 48% हो गया (जेब से खर्च का बोझ कम हुआ)।
 - गरीबी और स्वास्थ्य सेवा: AB-PMJAY ने कई परिवारों के लिए जेब से होने वाले स्वास्थ्य व्यय को काफी कम किया।
- वित्तीय समावेशन और कल्याण हस्तांतरण: सरकारी कार्यक्रम विशेष रूप से आर्थिक रूप से वंचित जनसंख्या को औपचारिक वित्तीय और कल्याण नेटवर्क में लाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं:
 - प्रधानमंत्री जन धन योजना (PMJDY): लाखों लोगों के लिए बैंक खाते बनाए, जिससे औपचारिक वित्तीय सेवाओं और कल्याण लाभों तक पहुँच मिली।
 - डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (DBT): लक्षित वितरण में सुधार और कल्याण वितरण में ‘लीकेज’ को कम किया।

- **स्टैंड-अप इंडिया और पीएम विश्वकर्मा:** अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/महिला उद्यमियों को ऋण और समर्थन प्रदान करते हैं, जिससे समावेशी उद्यमिता को बढ़ावा मिलता है।
- **पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना (PMGKAY):** कमज़ोर परिवारों के लिए खाद्य सुरक्षा समर्थन एक प्रमुख पुनर्वितरण साधन बना हुआ है।
- **पीएम-किसान:** छोटे और सीमांत किसानों को आय सहायता।
- **पहुँच और डिजिटल समावेशन:** भारत की राजकोषीय नीति डिजिटल अवसंरचना और पहचान प्रणालियों को प्राथमिकता देती है, जैसे कल्याण वितरण एवं बाज़ार पहुँच के लिए आधार लिंकिंग।
- **SDGs से जुड़ाव:** भारत SDG 10 ('देशों के अंदर और बीच असमानता को कम करना') के तहत शासन में लिंग एवं जाति प्रतिनिधित्व सहित प्रतिनिधित्व तथा पहुँच मीट्रिक को ट्रैक करता है।

आगे की राह: समावेशी विकास की ओर

- भारत की कम घरेलू क्रय शक्ति घरेलू मांग को सीमित करती है तथा रोजगार सृजन को बाधित करती है। समावेशी और सतत विकास प्राप्त करने के लिए नीतियों को आवश्यकता है:
 - सार्वजनिक रोजगार कार्यक्रमों को सुदृढ़ करना।
 - सामाजिक सुरक्षा और कल्याण योजनाओं का विस्तार करना।
 - मजदूरी बढ़ाना और श्रम-प्रधान उद्योगों को समर्थन देना।
 - शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण अवसंरचना को प्राथमिकता देना।
- मांग-आधारित दृष्टिकोण, जो निम्न और मध्यम वर्गों की आय बढ़ाता है, आर्थिक विकास को बनाए रखने तथा असमानता को कम करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

Source: BL

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत में आर्थिक असमानता की हालिया प्रवृत्तियों की समीक्षा कीजिए। इस असमानता के पीछे प्रमुख कारण क्या हैं, और इसे दूर करने में सरकारी नीतियाँ कितनी प्रभावी रही हैं?

